

नीति, अर्थ-विशेषण, प्रोत्साहन, सहाय्य, अभिमान, अनुवृत्ति, उत्कीर्तन, यांचा, परिहार, निवेदन, प्रवर्तन, आख्यान, युक्ति, प्रहर्ष और शिक्षा।

नाट्योक्ति स्त्री. (तत्.) काव्य. 1. विशिष्ट पात्रों को बताई जाने वाले कुछ विशेष उक्तियाँ या कथन 2. नाटकीय वाक्य-विन्यास 3. नाटक में प्रचलित कुछ विशेष सूचक शब्द 4. नाटक में पात्र का चरित्र और अभिप्राय प्रकट करने के लिए प्रयुक्त संवाद टि. इस प्रकार के संवादों के काव्यशास्त्र में पाँच भेद जाने गए हैं-प्रकाश, स्वगत, अपवारित, जनान्तिक, आकाशभाषिता, नाट्योक्ति द्वारा विशेष प्रकार का संबोधन दिया जाता है, यथा- 'आर्य', 'आर्यपुत्र', 'देव', 'पितामह' आदि।

नाट्योचित वि. (तत्.) 1. जो नाटक के लिए उपयुक्त या उचित हो 2. जिसका अभिनय हो सकता हो, अभिनय के योग्य।

नाट्योत्पत्ति स्त्री. (तत्.) नाटक की उत्पत्ति, उद्भव या जन्म।

नाट्योपयोगी वि. (तत्.) जो नाटक में या नाटक के लिए उपयोगी अथवा लाभदायक हो।

नाठ पुं. (तद्.) 1. विनाश, ध्वंस 2. अभाव, कमी 3. ऐसी संपत्ति जिसका कोई मालिक या स्वामी न हो, लावारिस संपत्ति।

नाठना स.क्रि. (तद्.) 1. ध्वस्त करना या नष्ट करना अ.क्रि. नष्ट होना, ध्वस्त होना दे. 'नटना'।

नाठा पुं. (तद्.) वह जिसके आगे-पीछे कोई वारिस न रह गया हो, उत्तराधिकारी रहित व्यक्ति।

नाठि अ.क्रि. (तत्.) दे. नाठना।

नाठी वि. (तद्.) 1. नष्ट 2. क्रोध में गाली रूप में प्रयुक्त शब्द, मरी, सब कुछ नष्ट करने वाली।

नाड़ स्त्री. (तत्.) 1. ग्रीवा या गरदन, 2. दे. नार 3. दे. नाल पुं. छोटा नाला।

नाड़क वि. (तत्.) नली या नल के आकार का और लंबा पुं. एक प्रकार की बड़ी, लंबी मछली।

नाड़ा पुं. (तत्.) 1. सूत की वह मोटी डोरी जिससे पायजामा, पायजामी, घाघरा आदि बाँधा जाता

है, कमरबंद मुहा. नाड़ा खोलना- किसी के साथ संभोग करने के लिए उद्यत होना 2. देव-पूजन आदि में प्रयुक्त होने वाला लाल या पीले रंग का सूत, मौली मुहा. नाड़ा बाँधना- किसी को विशिष्ट कला या विद्या सिखाने के लिए अपना शिष्य बनाना 3. पेट की अंदर की वह नली जिससे मल आँतों की ओर आता है मुहा. नाड़ा उखड़ना- इस प्रकार की नली का अपने स्थान से खिसकना जिससे कि दस्त हो जाए; नाड़ा बैठाना- झटके आदि देते हुए इस नली को अपने स्थान पर लाना।

नाडिंधम वि. (तत्.) 1. किसी नली द्वारा हवा फूँकने वाला 2. नाड़ियों को हिलाने वाला 3. श्वास, प्रश्वास की क्रिया को तेज करने वाला पु. सुनार

नाडिंधय वि. (तत्.) नाड़ी के द्वारा पान करने वाला।

नाड़ि स्त्री. (तत्.) 1. नाड़ी 2. नली।

नाड़िक पुं. (तत्.) 1. एक प्रकार का साग जिसे पटुआ भी कहते हैं, 2. समय का दंड नामक मान 3. दे. नाड़ी।

नाड़िका स्त्री. (तत्.) 1. नाड़ी, धमनी 2. समय की एक प्राचीन इकाई टि. एक नाड़िका घंटी में 24 मिनट होते हैं।

नाड़िकेल पुं. (तत्.) नारियल।

नाड़िपत्र पुं. (तत्.) पटुआ नामक विशेष प्रकार का साग।

नाड़िया पुं. (तत्.) नाड़ी देखकर रोग का पता लगाने वाला, वैद्य।

नाड़ी स्त्री. (तत्.) 1. धमनी, शुद्ध रक्त वाहिनी 2. कलाई की वह नाड़ी जिसकी गति आदि देखकर वैद्य या चिकित्सक शारीरिक अवस्था विशेषकर ज्वर आदि का बोध प्राप्त करता है मुहा. नाड़ी चलना- कलाई की नाड़ी में गति होना जो कि जीवित होने का बोध देता है; नाड़ी छूटना- नाड़ी का स्पंदन बंद हो जाना जो कि मृत्यु का सूचक है; नाड़ी देखना- कलाई की नाड़ी की गति को